नित्य-नियम

(पुष्प नं० १०)

संकलन-कर्त्ता :

वेदान्ताचार्य स्वामी चेतनानन्द जी चिदाकाशी

आयुर्वेद-बृहस्पति (D.SC.A.)

आयुर्वेद-शिरोमणि (लङ्का)

प्रकाशक : संचालक
श्री चिदाकाशी सत्यधर्म मण्डल,
स्वामी हेमराज मिशन मार्ग,
७/५ पूर्वी पटेल नगर,
नई दिल्ली-१२ ।

श्रीराम-जन्म महोत्सव, २ अप्रैल, १९६३

मुद्र
कृष्णा प्रिंटिंग
चावड़ी बा
दिल्ली

फोन : २७४३४८
तार : सत्यधर्म, नई दिल्ली

केवल आप से—

क्या वेदान्त योगियों की वस्तु है ?

क्या वेदान्त सन्यासियों का धन है ?

नहीं, कभी नहीं।

वेदान्त मानव-जीवन का अभिन्न अङ्ग है।

वेदान्त मानव-जीवन का प्राण है।

आप स्त्री, पुत्रादि से सुखी हैं ?

आप मान-मर्यादा से सन्तुष्ट हैं ?

आप ईर्षा-द्वेष से मुक्त हैं ?

आप अपने आप में तृप्त व प्रसन्न हैं ?

उत्तर 'हां' अथवा 'न' हो, दोनों दिशाओं में वेदान्त की शरण में आइए।

वेदान्त-सन्देश आपकी आत्मा को शांति
वेदान्त-केसरी स्वामी हेमराज जी
चिदाकाशी कृत
वेदान्त विषयक सरल भाषा में
गुरु-शिष्य प्रश्नोत्तर प्रणाली
तथा
मानसिक अज्ञान को
समूल नष्ट करने वाले
एक अद्वितीय भावपूर्ण ग्रन्थ

श्री अद्वैत सिद्धान्त

तथा

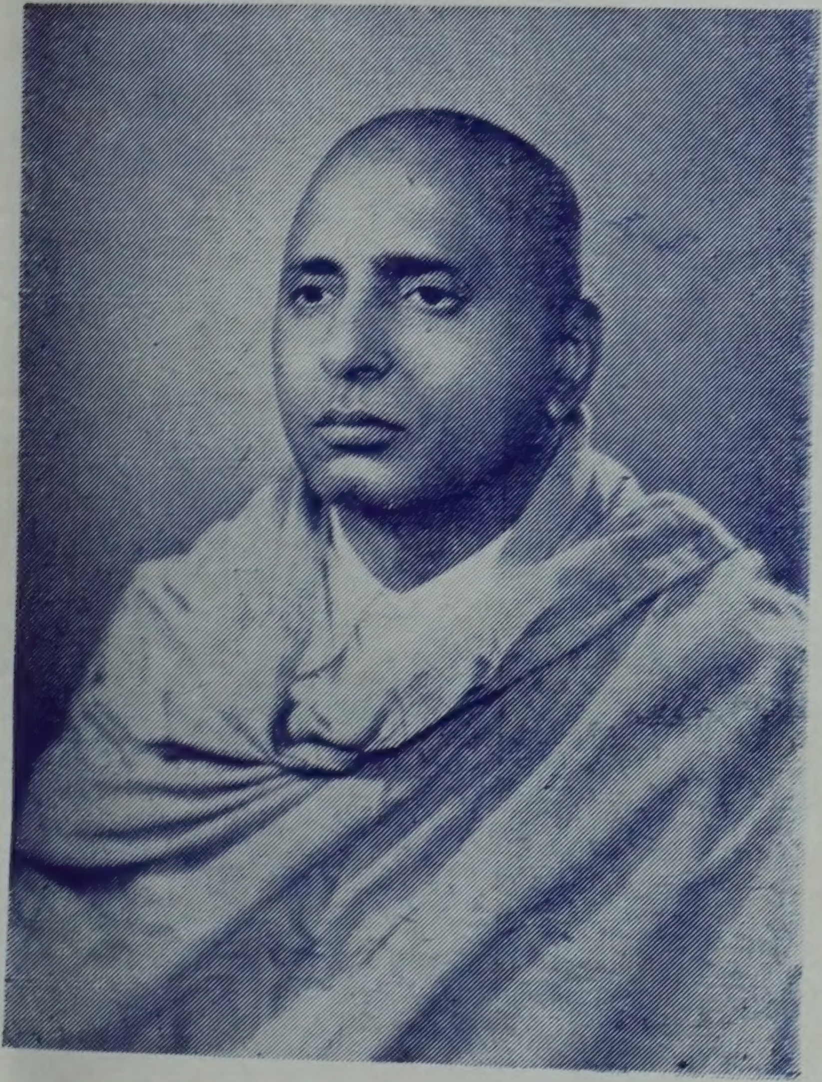
सिद्धान्त पुष्पावली

का पठन-पाठन तथा मनन कीजिए।

★



पूज्यपाद परमहंस श्री गुरुदेव
स्वामी परमानन्द जी चिदाकाशी



वेदान्ताचार्य पूज्यपाद गुरुदेव श्री स्वामी
चेतनानन्द जी चिदाकाशी आयुर्वेद बृहस्पति

भूमिका

मशीन आदि प्रत्येक काम में आने वाले जड़
ार्थ को भी नित्य नियमानुसार सफ़ाई और भोजन
आवश्यकता होती है। मानव-शरीर को स्वस्थ
र चिरकाल तक स्थायी रखने के लिये उसकी शुद्धि
साथ उसे दैनिक भोजन देना पड़ता है। शरीर के
द मन और बुद्धि को पवित्र और निर्मल बनाने के
ये भी कुछ नित्यकर्म करने होते हैं। हमारे पूर्वज
षियों ने हिन्दू-संस्कृति नहीं, नहीं, मानव-संस्कृति
एकमात्र स्रोत-वेद भगवान् से ब्रह्मज्ञान प्राप्त
या। लोककल्याण के लिए वे उसे समय-समय पर
ाशित करते रहे हैं। विज्ञानयुग में आत्मिक-शांति

को स्थिर रखने के लिए वेदान्त केसरी श्री १०८ स्वामी हेमराज चिदाकाशी जी महाराज तथा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस स्वामी परमानन्द जी चिदाकाशी ने अपने अनेक अमूल्य ग्रन्थरत्नों में मन-बुद्धि को पावन और अविचल बनाने के नियम और साधन लिखे हैं। उनमें ब्रह्मशतक मुख्य है। अतः सर्वसाधारण के लिये ब्रह्मशतक तथा आराधनात्मक अपने गुरुदेव की सरल और मधुर वाणी को नित्य नियम के रूप में संगृहीत करने के लिये मेरी चिरकाल से उत्कण्ठा थी जिसे कुछ समय पूर्व पूर्ण कर दिया था।

प्रथम बार की प्रतियों को पाठकों ने हाथोंहाथ उठाकर अपनी वाणी तथा हृदय को पवित्र किया

और मेरे प्रयास को सफल बनाया। इस छोटे से नित्य-नियम के पुष्प की बार-बार प्रेमी पाठकों द्वारा माँग होने के कारण द्वितीय संस्करण के रूप में इसको प्रकाशित करके पाठकों की इच्छा की पूर्ति की गई है।

आशा है सब सज्जन स्वयं और अपने परिवार के सब सदस्यों के अतिरिक्त अपनी मित्र मण्डली को भी नित्य पाठ करने के लिये इसे अपनाएंगे।

रामनवमी, २-४-६३.

लक्ष्मी आयुर्वेदिक औषधालय, निवेदक :

१५४२, दरियागंज, चेतनानन्द चिदाकाशी

समीप पटौदी हाउस, दिल्ली-६

श्री सत्यधर्म मण्डल के उद्देश

१—मानव मात्र के साथ अपना निजी स
निश्चित कर लोक-कल्याण में प्रवृत होना

२—गम्भीर विचार, परस्पर प्रेम और निजी
चार से विश्व-मैत्री का भाव भरना।

३—साम्प्रदायिकता, व्यर्थ का वितण्डावाद
दूसरों के छिद्रान्वेषण से दूर रहना।

४—अपने धन, बुद्धि और ज्ञान को यथास
परोपकार तथा जनहित में लगाना।

५—सब धर्मों और उनकी पवित्र पुस्तकों से
ग्रहण कर उनके दोषों की ओर दृष्टि न डाल

६—आत्मिक, नैतिक, भौतिक और शारीरिक
तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहना।

७—अनाथों, विधवाओं, यात्रियों तथा रोगियों के सुख और रक्षा का चिन्तन तथा क्रियात्मक योग देना।

८—उस सच्चिदानन्द और असीम ईश्वर पर ही पूर्ण विश्वास रखना।

९—किसी धर्म व पन्थ के विरुद्ध अपमान जनक शब्दों से अपनी जिह्वा को अपवित्र न करना।

१०-प्रत्येक के साथ अपने ज्ञान, सद्‌व्यवहार, आचरण और आत्मभाव से परस्पर स्नेह तथा सौहार्द बढ़ाना।

नोट—गुलज़ार मानी से उद्‌धृत।

★

श्री सत्यधर्म मण्डल के नियम

१—सदाचार का दृढ़ता से पालन करना।

२—सत्संग में निर्वैर विरोध सम्मिलित होना

३—ईश्वर के प्रति आस्था, ऋषि-महर्षि तथा महापुरुषों के निर्मल जीवन के प्रति पूर्ण रखना।

४—मांस, मदिरा, भङ्ग, तमाखू आदि सर्व की मादक वस्तुओं, जुआ, चोरी, व्यभि आदि दुर्व्यसनों और संशययुत भ्रम विचारों से दूर रहना।

५—आत्मोन्नति के मुख्य साधन शरीर के व्या प्राणायाम, आसन और आत्म-संयम के पालन की चेष्टा करना।

६—प्रातः उठते समय और रात्रि को सोते

प्रभु प्रार्थना द्वारा कुछ क्षण अवश्य मानसिक शुद्धि और आत्मिक शांति के लिए नित्य नियम का पालन करना।

७—प्रतिवर्ष भगवान् राम तथा गुरुजनों के जन्म-दिवस को सर्व सम्मिलित रूप से मनाना।

८—प्रत्येक दैनिक, साप्ताहिक तथा वार्षिक सत्संग में सम्मिलित होने के लिए अपने परिवार सहित सब इष्टमित्रों को प्रेरित करना।

९—हिन्दू संस्कृति के पालन करने के मुख्य साधन हिन्दी और संस्कृत भाषा का ज्ञानोपार्जन तथा प्रसार करना।

१०-वेदादि धर्मशास्त्रों और गुरुजनों के शास्त्रों का यथा संभव स्वाध्याय, मण्डल के उद्देश्यों के मनन और प्रचार के अतिरिक्त गुरु-ग्रन्थों का मुद्रण, प्रकाशन एवं प्रसारण करना।

ॐ नमः शुद्धचिदानन्दब्रह्मणे ।

अथ ब्रह्मशतकम्

ओम् तत् सत् ब्रह्म अज,
शुद्ध अजन्म अनूप ।
निर्विकार केवल अचल,
सत् चित् आनन्द रूप ॥ १

सर्वव्यापी एकरस,
निराकार निजरूप ।
पूर्णपुरुष अपार इक,
स्वयं प्रकाश अरूप ॥ २

अधिष्ठान आधार जग,
नारायण श्री राम ।
ज्ञानस्वरूप अखण्ड अति,
सर्वात्म निष्काम ॥ ३ ॥

दुख भञ्जन सङ्कटहरण,
दीनानाथ दयाल।
चन्दनयोग बन्धु सकल,
हितकारी कृपाल ॥ ४ ॥
विष्णुरूप प्रतिपाल जग,
सगुण विराट स्वरूप।
संहारक शिवरूप सों,
कारण ब्रह्मा रूप ॥ ५ ॥
अविनाशी अक्षर अमल,
शून्य विज्ञान असंग।
परमातम पररूप सों,
निर्विशेष निहरंग ॥ ६ ॥
दयासिन्धु करुणाभवन,
क्षमानिधि गुणमूल।

सर्वसंग सब ते परे,
नाशक सगरे शूल ॥ ७

वासुदेव ईश्वर सकल,
प्रेरक इन्द्रिय बुद्ध ।

पतित पुनीत पवित्र अति,
कारण शुद्ध अशुद्ध ॥ ८

महादेव महा तेजस्वी,
महाबलिष्ट महातत्त ।

महाधीर महाज्ञानवन्त,
महावीर अव्यक्त ॥ ६

भगवत अति प्यारो सकल,
साक्षी नित कूटस्थ ।

क्षोभरहित आनन्दमय,
स्वतः सिद्ध नित स्वस्थ ॥ १०

निरुपाध निर्गुण सदा,
शुद्ध चैतन्य अकाल।
निरावयव अञ्जन रहित
निजप्रकाश त्रैकाल॥ ११ ॥
शिवस्वरूप कल्याणमय,
सीमा सुख अरु शांत।
नित्य प्राप्त आतम सकल,
संहारक भय भ्रान्त॥ १२ ॥
ब्रह्म शतक स्तोत्र यह,
पढ़े विचारे जोय।
'हेमराज' संशय नहीं,
ज्ञानमुक्ति लहे सोय॥ १३ ॥

❀ इति ब्रह्मशतकम् ❀

विनय

तुम प्रभु मेरा आसरा,
तुम लग मेरी दौड़।
सिन्धु-काग जहाज बिन,
ज्यों पावत नहीं ठौर ॥ १
दासानुदास अति दीन हूँ,
हे प्रभु दीनानाथ।
शरण पड़े की लाज रख,
गहो बालक का हाथ ॥ २
मेरे औगुन ढांप ले,
अपना विरद संभाल।
अंध मूढ बालक तेरा,
तू परमपिता कृपाल ॥ ३

शुद्ध बुद्ध प्रकाश कर,
अपनी भक्ति लाय।
अंतर मल धोवूं सभी,
मानूं तेरी रजाय ॥ ४ ॥
'हेमराज' चिद्‌घन प्रभु,
हितकारी दातार।
चित्त मेरे में नित बसो,
सेवूं रज चरनार ॥ ५ ॥

☆

स्तुति

ओंकार अकाल अपारा।
सबका आतम चिद्घन सा

अगम अनन्त अनादि प्यारा।
अन्तर बाहर तू विस्ता

निर्गुण, निरंकार, अविनाशी।
पूर्ण पुरुष स्वतः प्रकाश

शुद्ध स्वरूप सत्ता सामान।
शब्द अर्थ तहां कल्पित जा

भूत भविष्यत रहित विराजे।
सर्व अवस्था इक रस छा

पूर रह्यो सब ठाईं प्यारा।
सब में सब सा सब से न्या

सगुण तूंही निर्गुण भी तूंही।
सर्वकला की खानी तू ही॥
धर्म निधि तू ज्ञान स्वरूप।
सुन्दर पावन तू सुख रूप॥
सर्व अवस्था मांहि व्यापें।
जनम मरन ते रहित विराजे॥
जी जी में तू प्रीतम भासें।
सूर चन्द में तू परकाशे॥
तारागण चमकाए तूने।
धरती व्योम ठहराए तूने॥
नाले नदी बहाये तूने।
पर्वत सभी जमाये तूने॥
तू ही वेग पवन में करे।
सकल जगत को तू ही भरे॥

भक्तों को जां पीड़ा परी।
उनकी तूने रक्षा
सर्व इष्ट तूं सर्व उपास।
तेरे भरोसे कार्य
तू सतगुरु ऊंचन ते ऊंचा।
प्रीतपाल सूचन ते स
आपद में तव ध्यान लगाऊं।
तुम बिन किसे पुकार सुन
मान गर्व कबहूं नहीं धारूं।
सम्पत्ति में प्रभु तुझे चिता
तेरी करनी मुझ को भावे।
मन में कबहूं शंक न आ
सुख दुख प्रभु तुझ ही से जानूं।
हर्ष शोक रंचक नहीं ज
सब कुछ तुझे जान तृपताऊँ।
'हेमा' शान्ति गले लगा

॥ मङ्गल ॥

ओ३म् तत् सत् चेतनस्वरूप आनन्द-घन निर्विकार सर्वात्मने नमः

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

●

अपनी भक्ति लाये प्रभुजी,
अपना नाम जपाओ मुझको ।
सगरे पाप विकार मिटावो,
पावन शुद्ध बनाओ मुझको ॥

द्वैतभावना रहे न रंचक;
निज चरणों में लाओ मुझक
हंगता ममता रहे न 'हेमा',
ज्योति जोत मिलाओ मुझको।
क्षमावन्त दातार स्वामी,
औगुन सबके बख्शनहारा
पापी का सुधारक प्रभु जी,
धर्मी का तू है रखवारा
पाप हरो निज दास बनाओ,
यह विनती है परम कृपारा
सतचित आनन्द मूल धर्म प्रभु,
'हेमा' आप ही आप है सारा।
सब की सेवा तेरी सेवा,
जान के तुझको रिझाऊं प्रभुजी

जो जो बने आज्ञा तेरी मानूं,

शंका मूल न लाऊं प्रभु जी ॥

सत्संगति में रहे निवासा,

शांति सरोवर नहाऊं प्रभु जी ।

निज आतम को जित कित देखूं,

सत संतोष कमाऊं प्रभु जी ॥ ३ ॥

प्रेम अपना प्रभुजी मुझको दे दें,

और न मांगू कोई खजाना ।

प्रेम अपने में कर मगनाना,

भासे न अपना कोई बिगाना ॥

तार प्रेम की रग रग बाजे,

भक्ति से बांधो मेरा गाना ।

'हेमराज' भक्ति की नदिया,

प्रेम सिन्धु तेरे होए रवाना ॥ ४ ॥

ना मैं किया न कर सकूँ, ना मैं करने
जो कुछ करो सो तुम ही करो, तुम ही करने
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है
सद्गुरु मोहे न विसारियो, लाख लोग मिल
मुझसे तुझको बहुत हैं, तुझसा मुझको न
बार बार वर मांगहूँ, हरषि देहु श्री
पद सरोज अनुपायनी, भक्ति सदा सत
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं नि
जन्म-जन्म रति राम पद, यह वरदान न अ
प्रभु ने हमको यही बताया, जगत खेल है खेल च
गुरुने हमको यही सिखाया, सबसे करते मेल च

★

सतगुरु आराधना

हे सत्पुरुष सदविद्या के भण्डार, हे भगवान्, हे कृपानिधान, हे पतित पावन, हे अनाथों के नाथ, हे निमाणियों के माण, हे सुमित्रजग, हे सर्व के आत्मा, हे शुभ गुणमूल, हे उदार आत्मा, हे शांति के दाता, हे गम्भीर मति, हे अनुभव स्वरूप हे ब्रह्म विद्या के उपदेशक, हे अज्ञानरूपी महातम के नाशक, हे ज्ञान के सूर्य, हे अशरण शरण, हे करुणा सागर, हे परमपिता, हे बालबुद्धियों की रक्षा करने वाले, हे स्वामी, हे अन्तर्यामी, हे आप्तकामी, श्री सतगुरु देव जी महाराज ! मैं आपकी शरण हूँ। बालक जान कर मेरी रक्षा करो, मेरे हृदय में निवास करके मेरे अज्ञान को हरो, मुझे हाथ देकर इस अनर्थ मूल संसार से बचाओ। मैं अजान हूँ, मूर्खमति हूँ, अपनी भलाई से अज्ञात हूँ, आप दीनदयालु हो, अतिशय कृपालु हो, मेरी रक्षा करो। मेरे शीश पर सद्गुरु अपनी कृपा का हाथ धरो।

आरती—१

सतगुरु पूजन को आई हैं, पुजारिन हम स
चावल, घी, काफूर, गिरी सब चोआ चन्दन
सतगुरु मेरे परम दयाल जी, आए शरण ति
सीस निवाकर विनती करत हैं, छोऊं शुद्ध चरण
श्रद्धा दान देओ कृपा कर, हृद में विराजो हम
सुखनिधि परम उदार मनोहर, मंगल रूप सुर
दर्शन कर सुख शांति व्यापे, हृदयंगम अति प्य
अमृत वर्षा सत्य उपदेश सों, ताप क्लेश निव
अलख अपार शोभा महिमा तव, बलिहारी, ब
प्रह्लादपुरी के नरसिंह स्वामी, दासियों के रखवा
पुजारिन हम सगरी ।

आरती—२

महाराज श्री हेमराज जी,
सतगुरु ईश्वर ओ३म् नमः।
परम मनोहर ज्ञान प्रभाकर,
आप हरिहर ओ३म् नमः॥
सत स्वरूपा आनन्द रूपा,
महा अनूपा ओ३म् नमः।
सुख शान्ति दातार स्वामी,
अनुभव सागर ओ३म् नमः॥
परम अवतारा परम उपकारा,
तिमिर निवारा ओ३म् नमः।

दीनदयाल सर्व दुख भंजन,
भ्रमभय पर हर ओ३म्
हे रखवारे हे प्रतिपारे,
परम प्यारे ओ३म्
नित ही सेवें चरन तिहारे,
(रहे सदा ही दास तिहारे)
यही कृपा कर ओ३म्

★

विनती

मैंनू अपनी शरणी ला सतगुरु,
मेरे दुखड़े दरद गंवा सतगुरु।

मैंनू तृष्णा ने लाचार कीता,
लाचार ते दरदर .खुआर कीता॥

चिन्ता ने सीना पछाड़ लीता,
इस अग थीं मैंनू बचा सतगुरु।

सारे जग विच रुल-रुल आया मैं,
हुट हुट के जनम गंवाया मैं॥

किते शान्ति सुख न पाया मैं,
तैनू देख निहाल होया सतगुरु।

मैंनू द्वेष विरोध दुखांवदे हिन,
मोह, हंगता, क्रोध सतांवदे ि
विषय हड्डी-हड्डी मेरी खांवदे हिन,
इन्हां दुष्टां नूं मिट्टी मिला सत
तेरा नाम संकटहरण है,
तेरा दरशन सब दुख भंजन
तेरी ओट में आशा पूरन है,
मैंनू अपना दास बना सत
मेरे हृदय में सत्य प्रकाश करो,
भक्ति अरु प्रेम का वास क
देह जगदी भावना नास करो,
एही दास दी आस पुजा सत

★

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्,

भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

शब्दार्थ—ॐ=सर्वव्यापक परमात्मन्; भू=पृथ्वी; भुवः=अन्तरिक्ष; स्वः=द्युलोक; तत्=उस; सवितुः= प्रकाशमान सूर्य के; वरेण्यम्=वरने योग्य अर्थात् प्रशंसनीय; भर्गः=प्रकाश, देवस्य=द्युतिमान् के; धीमहि= विचार करें। धियः=बुद्धि को; यो=जो (तेज); नः= हमारी; प्रचोदयात्=सन्मार्ग पर ले जाओ।

अर्थ—हे सर्वव्यापक प्रभो! आप तीनों लोकों में अथवा सत्, रज, तम आदि त्रिगुणों में अथवा उत्पादन, पोषण और मारण आदि त्रिशक्तियों में व्याप्त रहने वाले हैं। हम प्रकाशमान् सूर्य के उस प्रशंसनीय तेज का ध्यान धरें। आप से प्रार्थना है कि हे मेरे राम! हमारी बुद्धियों को आपका वह तेज सन्मार्ग पर चलाए। अर्थात् अज्ञान-रूपी अन्धकार से हमें ज्ञानरूपी सूर्य का प्रकाश दें और अपने सत्, चित् आनन्द स्वरूप ज्ञान का चिन्तन दें। आप हमें ऐसी ज्ञानशील बुद्धियों की ही सदा प्रेरणा दें।

प्रभु तू मेरा रखवारा !

तू प्रतिपाल, दयाल, कृपानिधि, तू प्रभु प्राण अधारा।
तू स्वामी, तू अन्तर्यामी, तू प्रीतम तू प्यारा॥
तू अन्तर तू बाहिर पूरन, तू घट-घट विस्तारा।
तेरी आस भरोसा तेरा, तेरा मान सहारा॥
तेरा ध्यान धरूं निस वासर, हे प्रभु दीन दयारा।
हाथ देय राखो विषयन से, हे प्रभु परम कृपारा॥
निमख न विसरो चित्त मेरे से, हे चिद्घन चिद्सारा।
बालक जान गहो हाथन ते, राखो नित्य संभारा॥
सदा बिराजो मेरे अन्तर, सतचित आनन्द सारा।
चोज करो घट-घट के मांही, रूप न रेख अकारा॥
मगन करो आतम सुख मांही, भूले सब संसारा।
सत्य स्वरूप अजन्मा निर्भय, 'हेमा' वन्दन हारा॥

शेखर जोशी

श्री सत्यधर्म मण्डल के अन्य प्रक

१. श्री अद्वैत सिद्धान्त (हिन्दी में)
२. श्री सिद्धान्त पुष्पावलि (आदि मूल 'गुलज़ार
मानी' उर्दू का हिन्दी अनुवाद)
३. श्री शान्ति सरोवर (हिन्दी में) गत्ते की जिल्द
कपड़े की ,,
४. श्री बालरक्षा (हिन्दी में)
५. श्री हरि-भक्ति-माला ,,
६. श्री अद्वैत दर्शन ,,
७. नित्य-नियम ,,
८. Essays on Vedanta (अंग्रेजी में)
९. The Master Speaks or the Words of Wisdom (अंग्रेजी में)
१०. Story of Mighty Soul the Life of Swami HemRaj Chidakashi ,,
११. Some Aspects of the Life of Swami HemRaj ji (अंग्रेजी में)
१२. चिदाकाशी मिशन (सिन्धी में)
१३. ज्ञान-यात्रा ,,
१४. अद्वैत विहार (हिन्दी में)
१५. नक्शा कानूने-जिन्दगी (उर्दू में)
१६. स्वामी हेमराजजी की जीवन झांकी (हिंदीमें)